रिश्वत देने में हर्ज़ क्या

बहुत लोगों से सुनी है एक बात। थोड़ी रिश्वत दे देने में क्या हर्ज ? काम तो हो जाएगा ?

समाज का भ्रष्टाचार के प्रति नजरिया लगभग ऐसा ही है। यही नहीं कि घूस लेना कोई पाप नहीं, बल्कि यह एक अच्छाई है ऐसा मानने वाले भी कम नहीं हैं। घूस का मतलब एक की जेब का पैसा दूसरे की जेब में जाने जैसी सामान्य सी बात है, ऐसे हल्के दृष्टिकोण वाले लोग भी हैं। लेकिन क्या भ्रष्टाचार की राह इतनी सरल है।

मुंबई के एक कस्टम अधिकारी को तुरंत कुछ पैसे कमाने का मोह जगा। उसने घूस मांगी। दे दी गई । उसकी जेब भारी हो तो हम क्यों चिन्तित हों ऐसा पूछा जा सकता है। लेकिन जेब भारी करने के लिए उसने जो किया ? घातक विस्फोट की क्षमता वाला आर.डी.एक्स. पार करने में उसने मदद की। परिणाम क्या हुआ ? मुंबई नगरी को दहलाने वाली विस्फोट-श्रृंखला। तीन सौ लोगों का जीवन निगल जाने वाली भयानक क्रूरता। ऐसे में भ्रष्टाचार क्या केवल एक आदमी की जेब से दूसरे आदमी की जेब में पैसे प्रवाहित होना मात्र है ?

भ्रष्टाचार देश की सुरक्षा का शत्रु है।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने एक बार कहा था। गरीबी उन्मूलन के लिए खर्च किए जा रहे एक रूपये में से केवल पन्द्रह पैसे ही गरीब को मिलते हैं। बाकी पचासी पैसे रास्ते में - बिखर जाते हैं। इसमें से आधा वेतन में तथा बाकी ऊपरी कमाई में जाता है । ऐसे में क्या भ्रटाचार केवल एक आदमी की जेब से दूसरे आदमी की जेब में पैसे प्रवाहित होने जैसी सरल बात है ?

ऐसे में भ्रष्टाचार गरीब आदमी का दुश्मन बन जाता है।

गरीब आदमी का भरण-पोषण सरकार की जिम्मेदारी है। इसी के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली की व्यवस्था की गई है। अब सार्वजनिक वितरण की विशेषता भी सुन लो ! राशन के चावल का पैतीस प्रतिशत काले बाज़ार में जाता है। राशन की चीनी का छत्तीस प्रतिशत। किसी ने दस पैसे जुटा लिए तो आपको क्या परेशानी, इस प्रकार से चाहो तो इसे नकार दो। लेकिन चिन्ता की बात नहीं है क्या ? गरीब को राशन देने के लिए सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी दस हजार करोड़ रूपया है। इसमे से आधी कालाबाजारी करने वालो की जेब मे जाती है। केरल के समूचे योजनागत बजट से भी ज्यादा। यह गरीब की जेब कतरने जैसा नहीं है क्या ?

तो क्या भ्रष्टाचार एक आदमी का पैसा दूसरे आदमी की जेब में प्रवाहित होने की सरल प्रक्रिया है?

भ्रष्टाचार योजना का भी शत्रु है।

उत्तर भारत के एक मुख्यमंत्री के बारे में एक कहानी कही जाती है। उनके साले ने आकर शिकायत की। एक प्रमाण-पत्र के लिए पटवारी के पास जाने पर उसने तीन सौ रूपये रिश्वत ले ली। जीजा जी के सत्ता में होते हुए भी उसने ऐसा दुस्साहस किया। उसे बिठाकर पुचकारते हुए मुख्यमंत्री अंदर गए। बटुए से निकालकर उसे सौ रूपये लाकर दिए। पटवारी द्वारा लिए गए तीन सौ रूपयों में से मेरा हिस्सा सौ रूपया है। तुम मेरे साले हो इसलिए तुमसे वह नहीं चाहिए। भ्रष्टाचार पर बनी आम सहमति समझ में आ गई न?

भ्रष्टाचार का घड़ा फूटने पर ही लोग उसके बारे में जान पाते हैं। तहलका की याद है न। हमारा हथियारों का व्यापार भ्रटाचार में डूबा हुआ है, इसी को तो तहलका प्रकाश में लाया। तो फिर भ्रटाचार का मतलब एक आदमी का पैसा दूसरे आदमी की जेब में जाने जैसी सरल प्रक्रिया है क्या ?

भ्रष्टाचार देश की सुरक्षा का शत्रु है।

एक छोटी भ्रष्टाचार की कहानी। राजधानी के शहर से ही। दिल्ली के छोटे दूकानकारों व साइकिल-रिक्शे वालों से पुलिस तथा नगर निगम के अधिकारी नियमित रूप से घूस लेते थे। इसके बारे में न जानने वाला दिल्ली में कोई भी न था। मानसी नामक संस्था ने इसके बारे में एक अध्ययन किया। उनके द्वारा जुटाई गई जानकारी अविश्वसनीय थी। एक महीने में इस प्रकार की घूस के रूप में चालीस करोड़ रूपये की वसूली होती थी। यह जानकारी प्रधानमंत्री के संज्ञान में आई।

उन्होंने दख़ल देकर छोटी दूकानों तथा साइकिल रिक्शों के लाइसेंस की व्यवस्था ख़त्म करा दी।

भारत में काले धन की मात्रा, केन्द्र व राज्यों की सरकारों की कुल आमदनी से भी सात लाख करोड़ रूपया ज्यादा है।

इंदिरा गांधी ने एक बार कहा था, 'भ्रष्टाचार एक ग्लोबल फेनॉमेनॉ है।' उन पर भ्रष्टाचार को उचित ठहराने का आरोप लगा। कार्टूनिस्टों ने इसकी अच्छी तरह से खिल्ली उड़ाई । लेकिन, उनकी बात में छिपे हुए सत्य को हम नज़रंदाज़ कर सकते हैं क्या?

आर्थिक क्षेत्र में वैश्वीकरण हो चुका था। भ्रष्टाचार का बहाव हमेशा ऊपर से नीचे की ओर ही होगा। विश्व के राष्ट्राध्यक्षों ने इसके उदाहरण स्थापित किए है। विश्व का सबसे भ्रष्ट राष्ट्राध्यक्ष कौन हुआ है यह जानना चाहिए न ? उनकी गैर-कानूनी सम्पत्ति कितनी यह जानना चाहिए न ? सूची यहां पेश है - सुहार्तो-इंडोनेशिया - 3,500 करोड़ डालर, फर्डीनंड मार्कोस - फिलीपाइन्स - 1,000 करोड़ डालर, सानी अब्बाच्चा - नाइजीरिया - 50,000 करोड़ डालर, मिलोसेविक - सर्बिया - 10,000 करोड़ डालर, डुबलियर - हेती - 3,000 करोड़ डालर। हमें संतोष करना चाहिए कि भारत से इस सूची में कोई नहीं है।

संतोष कर लेते हैं। लेकिन गर्व मत करो। ट्रांसपेरेन्सी इंटरनेशनल नामक संस्था ने पाया है कि भ्रष्टाचार के मामले में भारत का प्रमुख स्थान है। सबसे कम भ्रष्टाचार वाला देश है फिनलैंड। उसके बाद डेन्मार्क, न्यूजीलैंड, आइसलैंड, सिंगापुर। हमारे लिए थोड़े सुकून की बात यह है कि पाकिस्तान भारत से ज्यादा भ्रष्टाचार में लिप्त देश है।

भ्रष्टाचार रोकने का क्या मार्ग है ? के. सान्तानम समिति से लेकर आज तक अनेक लोगों ने इसके तमाम मार्ग बताए हैं। उन रास्तों पर पता नहीं क्यों हम आज तक नहीं चल पाए। या फिर शायद हमने कोशिश ही नहीं की।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के गठन के साथ ही भ्रष्टाचार के सिर पर गाज गिरेगी ऐसी उम्मीद जगी थी। लेकिन आग में अंकुवाया हुआ धूप में झुलसेगा क्या ? भ्रष्टाचार जैसे का तैसा बना हुआ है। लेकिन भ्रष्टाचार रोकने का एक आसान रास्ता है। केवल एकमात्र रास्ता -

घूस मत दो,

घूस मत लो।

(अनुवादक : यू.के.एस.चौहान)